प्रस्तावना- (Introduction)

भाषा समाज की नई पीढ़ी, शब्दों के अर्थ को पुरानी पीढ़ी के संसर्ग से प्राप्त करती है। बालक अपने माता-पिता एवं संबंधियों के द्वारा उच्चरित ध्वनि संकेतों का अनुकरण करता है। प्रत्येक भाषा की ध्वनि, शब्द, वाक्य आदि के स्तरों पर अपनी स्वतंत्र व्यवस्था होती है, और उस भाषा के बोलने वालों के द्वारा निर्धारित होती है। हिंदी के जो शब्द हैं चाहे वह किसी भी प्रकार (संज्ञा, विशेषण, क्रिया आदि) के क्यों न हों? उससे भोजपुरी में बनने वाले शब्द भिन्न- भिन्न होते हैं, परंतु भोजपुरी में उसका एक-दूसरे से आर्थी पर्याय देखने को नहीं मिलता है, जैसे- हिंदी का एक शब्द है **'रोना'** (वह लड़का रो रहा है।) लेकिन भोजपुरी में इससे अनेक शब्द बनाए जा सकते हैं, जैसे- रोवल, फेकरल, भेभा गावल, चोकरल। उदाहरण के लिए-

- राम आज **रोवता।**
- महेश **फेकरता।**
- उ **भेभागावेलन।**
- रमुआ के माई **चोकरत** बीया।

इसी प्रकार के विभिन्न शब्दवर्गों के शब्दों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोधकार्य हेतु "मानक हिंदी और भोजपुरी के कोशीय शब्द : एक तुलनात्मक अध्ययन" विषय का चयन किया गया है। वैसे गहन स्तर पर देखा जाए तो इन सभी भोजपुरी शब्दों की संदर्भ के अनुसार अलग अर्थछटाएँ भी होती हैं। उपर्युक्त वाक्यों को अगर अर्थ की दृष्टि से देखा जाए तो हिंदी का 'रोना' सभी वाक्यों में समाहित है, परंतु भोजपुरी में वाक्यगत दृष्टि से इसका आशय (अर्थ) अलग-अलग रूपों में देखने को मिलता है, जैसे-

- राम आज **बहुते** रोवता।
- महेश **सबेरही** से फेकरता।
- उ **रोजे** भेभागावेलन।
- रमुआ के माई **गाय जइसन** चोकरत बीया।

भाषा के अर्थ में भोजपुरी शब्द का पहला लिखित प्रयोग सन् 1789 ई. में पाया गया। "डॉ अब्राहम ग्रियर्सन रेमन" ने 'शेरमुताखरिन' के अनुवाद की भूमिका में उद्धरण के रूप में लिखे हैं, कि "1789 ई. में सिपाहियों की एक टुकड़ी चुनारगढ़ की ओर भोर में ही शहर से मार्च करते हुए जा रही थी, उसमें से एक सिपाही एक अंधेरी गली में घुसकर एक मुर्गी को पकड़ लाया वहाँ के लोग चिल्लाने लगे। तभी उसमें से एक सिपाही मुहावरे में उन लोगों से कहा कि इतना मत चिल्लाओ आज हम लोग फिरंगी (अंग्रेज़) के साथ जा रहे हैं। 'लेकिन हमनी के चेतन सिंह के आसामी (नोकर) हईं जा।[1]' इस उद्धरण से यह बात स्पष्ट होती है कि भारतीय भोजपुरी लोक व्यवहार की जीवंत भाषा है।"

भोजपुरी भाषा के प्राचीनता संबंधी अध्ययन एवं अनुसंधान के लिए प्राचीन भारतीय भाषाओं में सबसे अधिक भोजपुरी का तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक है। भारतवर्ष के सबसे प्राचीन ग्रंथ 'ऋग्वेद' और सबसे प्राचीन भाषा है वैदिक भाषा। वैदिक भाषा के अलावा पालि, मागधी, अवधि आदि भाषाओं से तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर इसका ऐतिहासिक एवं प्राचीनता से जुड़े तथ्य उभरकर सामने आते हैं।

[1] सिंह, जयकान्त. (2013 ई.). मानक भोजपुरी भाषा आ रचना. पृ. 14

शोध की समस्या- प्रस्तुत शोध प्रबंध में भोजपुरी भाषा के कोशीय शब्दों के अर्थों का अध्ययन हिंदी के मानक शब्दों में जब किया गया तो विभिन्न प्रकार की समस्याएँ सामने आईं, क्योंकि हिंदी के एक शब्द का भोजपुरी में अनेक शब्द बनेगें, तथा अर्थ की दृष्टि से उसका वाक्यगत संरचनाओं में अलग- अलग रूप देखने को मिलता है।

उदाहरण स्वरूप- "पीड़ा - दुखाइल, भभाइल, पीराइल, मरोड़ल" इन शब्दों को अगर देखा जाए तो हिंदी का एक शब्द 'पीड़ा' भोजपुरी में अनेक वाक्यगत अर्थों के रूप में देखने को मिलता है।

परिकल्पना- प्रस्तुत शोध प्रबंध में हिंदी के मानक शब्दों का आर्थी क्षेत्र के आधार पर भोजपुरी भाषा के शब्दों में विभिन्न स्तरों पर तुलनात्मक और कोशीय अध्ययन किया गया है।

साहित्य का पुनरवलोकन- इस शोध विषय से संबंधित कार्य निम्न विद्वानों द्वारा किया गया है, इनके अलावा भोजपुरी क्षेत्र के जुड़े विद्वानों की पुस्तकों के माध्यम से भी इस शोध कार्य में सहायता मिली है।

1- **गुरु, कामता प्रसाद - हिंदी व्याकरण-** कामता प्रसाद गुरु ने भाषा के साथ-साथ मनुष्य की संप्रेषण की क्षमता को व्याकरण के माध्यम से दिखाने की चेष्ठा की है, जिसमें काल, पक्ष एवं वृत्ति के अलावा शब्द –विचार, ध्वनि एवं विशेषण के भेदों के साथ-साथ सभी पक्षों पर साथ-साथ विचार किया है।

2- **तिवारी,उदयनारायण - भोजपुरी भाषा और साहित्य-** उदयनारायण तिवारी ने अपनी पुस्तक में भोजपुरी भाषा के उद्भव एवं विकास के साथ-साथ, भोजपुरी भाषा में वाक्यगत प्रयोग अर्थ के आधार पर किया है, इसमें उन्होंने भोजपुरी की क्रिया व्यवस्था पर भी चर्चा की है।

3- **ओझा, त्रिभुवन - प्रमुख बिहारी बोलियों का तुलनात्मक अध्ययन-** इस पुस्तक में बिहारी बोलियों का सामान्य परिचय एवं साथ-ही संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि का विस्तारपूर्वक उल्लेख किया है।

4- **सिंह, सूरजभान - हिंदी का वाक्यात्मक व्याकरण-** प्रस्तुत पुस्तक में वाक्य एवं वाक्य के वर्गीकरण को वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है, तथा वाक्य के अलावा पद एवं पदबंध के साथ-साथ क्रिया पद पर भी चर्चा की गई है।

5- सिंह, जयकान्त - मानक भोजपुरी भाषा आ व्याकरण- इस पुस्तक में भोजपुरी भाषा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, क्षेत्र विस्तार के साथ-साथ व्याकरणिक पृष्ठभूमि पर मूलभूत चर्चा की गई है।

शोध चयन के उद्देश्य- प्रस्तुत शोधकार्य का मुख्य उद्देश्य- 'हिंदी के मानक शब्दों से भोजपुरी में कितने शब्द बनाए जा सकते हैं, और उनका उपयोग कहाँ-कहाँ किया जा सकता है।' को विविध संदर्भों में देखना है। इसमें हिंदी के मानक शब्दों से भोजपुरी में प्रयुक्त हुए अनेक शब्दों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया।

शोध चयन के उद्देश्य क्या जो सकते हैं, वे निम्नलिखित हैं-

1. हिंदी और भोजपुरी के कोशीय शब्दों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. हिंदी और भोजपुरी के शब्दों का वाक्यात्मक दृष्टिकोण से विश्लेषित करना।

3. हिंदी और भोजपुरी के कोशीय शब्दों का तुलनात्मक अध्ययन अर्थ के आधार पर करना।

4. हिंदी और भोजपुरी के विश्लेषण शब्दों का तुलनात्मक अध्ययन।

5. हिंदी से बने भोजपुरी शब्दों का भाषा-शिक्षण में प्रभावगत शिक्षण प्रविधि का उपयोग।

6. हिंदी और भोजपुरी के क्रिया शब्दों का तुलनात्मक अध्ययन अर्थ के आधार पर।

7. हिंदी से बनने वाले भोजपुरी में अनेक शब्दों का आर्थीय विश्लेषण।

8. हिंदी के कोशगत शब्दों से बनने वाले भोजपुरी शब्दों का तुलनात्मक अध्ययन।

महत्व- आज भोजपुरी भाषा का जिस प्रकार से विकास हो रहा है, उसको देखते हुए हिंदी के मानक शब्दों का भोजपुरी में किस प्रकार से अनेक शब्दों के रूप में प्रयोग हो और उसका उपयोग व्यावहारिक दृष्टि से कहाँ – कहाँ किया जा रहा है। इसमें यह शोध प्रबंध उपयोगी एवं सहायक होगा।

शोध सामग्री के स्रोत- शोध सामग्री स्त्रोत के लिए निम्न प्रकार से डाटा अर्थात् हिंदी शब्दों की सूची को अनेक क्षेत्रों जैसे, कहानी, उपन्यास, लोकगीत आदि पुस्तकों के माध्यम से एकत्रित किया गया है।

सीमाएँ- इस शोध कार्य की सीमा यह है कि यह मानक हिंदी और भोजपुरी भाषा के शब्दों का तुलनात्मक अध्ययन विशेष भौगोलिक क्षेत्रों (गाजीपुर, बलिया, बक्सर, आरा, भोजपुर, बनारस, चंदौली, आजमगढ़, मऊ.....) के आधार पर किया गया है।

उपयोगिता- उपयोगिता की दृष्टि से अगर देखा जाए तो 'किसी भी चुनौतियों एवं समस्याओं को सकारात्मक रूप में लें और उससे पार पाने के लिए दृढ़ प्रतिबद्धता के साथ सतत प्रयास करें तो वे हमारे लिए वरदान साबित हो सकता है।' आज भोजपुरी भाषा का जिस प्रकार से प्रचार-प्रसार बढ़ रहा है उसको देखते हुए भोजपुरी भाषा की समस्त संकल्पना साकार हो रही है। किसी भी भाषा का मानकीकरण करने के लिए भाषा के मूल स्वरूपों को जानना आवश्यक होता है। जिस प्रकार भाषा संप्रेषण का माध्यम होने के साथ–साथ व्यावहारिक दृष्टिकोण से एक दूसरे को मिलाने का कार्य करती है ठीक उसी प्रकार भाषा द्वारा भाषा शिक्षण के क्षेत्र में शिक्षक और विद्यार्थी के परस्पर संबंध बनाने से भी योगदान होता है।

प्रथम अध्याय

मानक हिंदी और भोजपुरी : भाषिक परिदृश्य

1.1 भूमिका- प्राचीन काल में उत्तरी भारत को भारतखंड तथा जंबूदीप के नाम से ही अभिहित किया जाता था। बौद्ध धर्म के पालि ग्रंथों में भी उत्तरी भारत को जंबूदीप ही कहा गया है। हमारे देश का हिंद नाम वस्तुतः सिंधु का प्रतिरूप है। ईरान अथवा फारस के निवासी सिंधु नदी के तट के प्रदेश को हिंद तथा यहाँ के रहने वालों को हिंदू कहते थे। [फारसी में 'स', 'ह', में परिवर्तित हो जाता है।] ग्रीक लोगों ने सिंधु नदी को इंदोस एवं यहाँ के निवासियों को इंदोई तथा प्रदेश को इंदिके अथवा इंदिका नाम से संबोधित किया। यही आगे चलकर लैटिन रूप में इंडिया बना आरंभ में इंदिका अथवा इंडिया शब्द पश्चिमोत्तर प्रदेश का ही वाचक था; किंतु धीरे-धीरे इसके अर्थ का विस्तार हुआ और वह समग्र देश के लिए प्रयुक्त होने लगा।

उधर देश के अर्थ में हिंद शब्द फारस से अरब बन गया। जब अरब के निवासियों ने सिंध को जीता तो उसे हिंद न कहकर सिंद ही कहा। इसका कारण यह था कि सिंद प्रदेश वस्तुतः हिंद देश का ही एक भाग था। इस हिंद से ही हिंदी शब्द बना।

1.2 हिंदी संक्षिप्त: परिचय- हिंदी का एक अर्थ है, 'हिंदुस्तान का निवासी' (देखो एकबाल का तराना- हिंदी है हम वतन है हिंदोस्ताँ हमारा), किंतु अमीर खुसरो के समय में इसका तात्पर्य भारतीय मुसलमानों से था। खुसरो ने हिंदू तथा हिंदी में अंतर स्पष्ट करते हुए लिखा है:

बादशाह ने हिंदुओं को तो हाथी से कुचलवा डाला किंतु मुसलमान जो हिंदी थे सुरक्षित रहे। इस प्रकार विदेशी मुसलमानों ने भारतीय मुसलमानों को ही हिंदी कहा और आगे चलकर उनकी भाषा का नाम हिंदी पड़ा। यह वही भाषा थी जिसका हिंदू तथा भारतीय मुसलमान समान रूप से व्यवहार करते थे। संक्षेप में भाषा के अर्थ में हिंदी शब्द मुसलमानों की ही देन है और इसका इतिहास भी बहुत पुराना है।

हिंदी के अन्य नाम- भाषा के अर्थ में हिंदी के अतिरिक्त हिंदुई, हिंदवी, हिंदुवी, दक्खिनी, दखनी या दकनी हिंदुस्थानी, हिन्दुस्तानी खड़ी बोली, रेख्ता, रेख्ती आदि का भी प्रयोग होता है। भाषा का अध्ययन करने वालों को इन्हें स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए।

हिंदी प्राचीनता की दृष्टि से हमारी भाषा का यह नाम अत्यंत महत्वपूर्ण है इसके नामकरण के संबंध में अन्यत्र कहा जा चुका है कि विकास की दृष्टि से इसकी उत्पत्ति के संबंध में भी संक्षेप में जान लेना आवश्यक है। भारत के इतिहास में गंगा यमुना के बीच की भूमि अत्यधिक पवित्र मानी गई है। अत्यंत प्राचीन काल से ही हिमालय तथा विंध्यपर्वत के बीच की भूमि आर्यावर्त के नाम से प्रख्यात है, इसी के बीच में मध्यदेश है, जो भारतीय संस्कृति तथा सभ्यता का केंद्र बिंदु है। संस्कृत, पालि तथा शौरसेनी प्राकृत इस मध्यप्रदेश की विभिन्न युगों की भाषा थी। कालक्रम से इस प्रदेश में शौरसेनी अपभ्रंश का प्रचार हुआ। यह कथ्य (बोल-चाल) शौरसेनी अपभ्रंश ही कालांतर में हिंदी के रूप में परिणत हुआ। इस पर पंजाबी का भी पर्याप्त प्रभाव है। हिंदी का केंद्र आर्यावर्त है इसलिए आर्यसमाज के प्रवर्तक **'स्वामी दयानंद सरस्वती'** ने इसे अपने ग्रंथों में आर्य भाषा कहा है।

हिंदुस्थानी- बंगाल विशेषतया कलकत्ता के बंगाली उत्तर भारत के निवासियों को पश्चिमी अथवा हिंदुस्थानी और उनकी भाषा को हिंदुस्थानी कहते हैं। कलकत्ता के बालीगंज के पार्क का नाम हिंदुस्थान पार्क है, हिंदुस्तान पार्क नहीं। इस प्रकार भाषा के अर्थ में हिंदुस्थानी से कलकत्ता में हिंदी से ही तात्पर्य है।

हिंदुस्तानी- हिंदुस्तानी की निरुक्ति हिंदी से भी अधिक जटिल है क्योंकि समय तथा व्यक्तियों के अनुसार इसकी परिभाषा परिवर्तित होती रही है, इसके कारण भ्रम भी पर्याप्त हुआ है, इसलिए तनिक विस्तार के साथ इसकी मीमांसा आवश्यक है-

हिंदुस्तानी की निरुक्ति के संदर्भ में **'हाब्सन-जाब्सन (1886 ई.)'** में निम्नलिखित विवरण दिया गया है:

'हिंदुस्तानी' शब्द वास्तव में विशेषण है; किंतु संज्ञा के अर्थ में यह दो अर्थों में प्रयुक्त होता है-

|क| हिंदुस्तान का निवासी।

|ख| हिंदुस्तानी जबान अथवा हिंदुस्तानी भाषा; किंतु वास्तव में उत्तरी भारत में मुसलमानों की भाषा। यही दक्षिण के मुसलमानों की भी भाषा है। आगरा तथा दिल्ली के आस-पास की हिंदी फारसी तथा अन्य विदेशी शब्दों के सम्मिश्रण से यह विकसित हुई है। इसका दूसरा नाम उर्दू भी है। मुसलमानी राज्य में यह अंतर्प्रान्तीय व्यवहार की भाषा थी। देश के अधिकांश भाग में और कतिपय श्रेणी के लोगों में यह इसी रूप में व्यवहृत होती है।

1.3 भोजपुरी : संक्षिप्त परिचय भोजपुरी पूर्वी अथवा मागधी परिवार की पश्चिमी बोली है। **'ग्रियर्सन'** ने पश्चिमी मागधी को बिहारी के नाम से अभिहित किया है। बिहारी से ग्रियर्सन का उस एक भाषा से तात्पर्य है जिसकी मगही, मैथली तथा भोजपुरी तीन बोलियाँ हैं। भाषाविज्ञान की दृष्टि से ग्रियर्सन का कथन सत्य है; किंतु इन तीनों बोलियों में पारस्परिक अंतर भी है। मैथिली 'अछ' या 'छ' धातु का प्रयोग भोजपुरी तथा मगही में नहीं है। इसी प्रकार भोजपुरी क्रियाओं के रूप में मैथिली तथा मगही क्रियाओं के रूप में जटिलता का सापेक्षिक दृष्टि से अभाव है। उधर मैथिली में प्राचीन काल से ही साहित्य रचना होती आ रही है और भोजपुरी तथा मगही में भी लोकगीतों तथा लोक-कथाओं का बाहुल्य है। इन अंतरों के साथ- साथ इन तीनों बोलियों के बोलने वालों को इस बात की प्रतीति भी नहीं होती है कि उनकी बोलियाँ एक ही भाषा की उपभाषाएँ हैं। इस संबंध में यह भी कठिनाई है कि बिहारी भाषा का कोई साहित्यिक रूप उपलब्ध नहीं है। ऐसी दशा में इन बोलियों के बोलने वाले अपनी-अपनी बोली को एक दूसरे से पृथक माने तो इसमें आश्चर्य ही क्या है? यह सब होते हुए भी मैथिली मगही तथा भोजपुरी के बोलने वाले अत्यंत सरलतापूर्वक एक दूसरे की बोली समझ लेते हैं।

बिहारी बोलियों का विस्तार- बिहार की तीनों बोलियों में विस्तार क्षेत्र की दृष्टि से भोजपुरी का स्थान सर्वोच्च है। उत्तर में हिमालय की तराई से लेकर दक्षिण में मध्यप्रांत की सरगुजा रियासत तक इस बोली का विस्तार है। बिहार प्रांत के शाहाबाद, सारन, चंपारन, राँची, जशपुर स्टेट, पलामू के कुछ भाग तथा मुजफ्फरपुर के उत्तर पश्चिमी कोने में इस बोली के बोलनेवाले निवास करते हैं।

इसी प्रकार उत्तर-प्रदेश के बनारस (जिसमें बनारस स्टेट भी सम्मिलित है), गाजीपुर, बलिया, जौनपुर के अधिकांश भाग, मिर्जापुर गोरखपुर, आजमगढ़ तथा बस्ती जिले की हरैया तहसील में स्थित कूवानों नदी तक भोजपुरी बोलने वालों का आधिपत्य है।

कतिपय विद्वानों ने भोजपुरी के स्थान पर **भोजपुरिया** शब्द का प्रयोग किया है। विशेषण के लिए 'ई' की भाँति भोजपुरी में 'इया' प्रत्यय भी प्रचलित है; किंतु इस 'इया' प्रत्यय से किंचित अप्रतिष्ठा अथवा घनिष्ठता का भाव आता है जिसका 'ई' प्रत्यय में वस्तुतः अभाव है। 'ई' प्रत्ययवाला रूप छोटा है तथा जिस प्रकार से बंगाल से बंगाली नेपाल से नेपाली शब्द बन जाते हैं उसी प्रकार यह भी बन जाता है। इसके अतिरिक्त बिंस, हार्नले तथा ग्रियर्सन आदि विद्वानों ने भी अपने लेखों तथा पुस्तकों में भोजपुरी शब्द का ही प्रयोग किया है, जिसके कारण वह बहुत प्रचलित हो गया है।

1.4 भोजपुरी भाषा का नामकरण- भोजपुरी- बिहार के शाहाबाद जिले के भोजपुर गाँव के नाम के आधार पर इस बोली का नाम भोजपुरी पड़ा है। मागधी अपभ्रंश के पश्चिमी रूप में

विकसित इस बोली का क्षेत्र बनारस, जौनपुर (अंशतः), मिर्जापुर (अंशतः) गाजीपुर, गोरखपुर, देवरिया, आजमगढ़, बस्ती, शाहाबाद, चंपारण, सारन तथा आस-पास का कुछ क्षेत्र है। हिंदी प्रदेश की बोलियों में भोजपुरी को बोलनेवाले सबसे अधिक लोग हैं। इसमें केवल लोक साहित्य मिलता है। इधर कुछ वर्षों से साहित्य की रचना भी हुई है/हो रही है। भोजपुरी की मुख्य उप बोलियाँ उत्तरी, दक्षिणी, पश्चिमी तथा नागपुरिया हैं।

उदाहरण स्वरूप- स्वर मध्यम 'र' का लोप (धरि - धइ, लरिका - लइका), (बूंद - बून, सुंदर - सुन्नर), 'म्ह' का 'म' (ब्रह्म - बरम), 'न' का 'ल' (नोट – लोट, नंबर – लंबर, नोटिस - लोटिस) संगीतात्मकता आदि इसकी कुछ विशेषताएँ हैं।

भोजपुरी बोली का नामकरण शाहाबाद जिले के भोजपुर परगने के नाम पर हुआ है। शाहाबाद जिले में भ्रमण करते हुए **'डॉ. बुकनन सन् (1812) ई.'** में भोजपुर आए थे उन्होंने मालवा के भोजबंशी उज्जैन राजपूतों के चेरो जाति को पराजित करने के संबंध में उल्लेख किया है।

बंगाल की एशियाटिक सोसाइटी के 1871 के जनरल में छोटा नागपुर, पचेत तथा पलामू के संबंध में मुसलमान इतिहास लेखकों के विवरणों की चर्चा करते हुए **'ब्लाचमैन'** ने भोजपुरी का उल्लेख किया है : वे लिखते हैं कि – "बंगाल के पश्चिम प्रांत तथा दक्षिणी बिहार के राजा, दिल्ली के सम्राट के लिए अत्यंत दुखदायी थे। अकबर के राजत्वकाल में बक्सर के समीप भोजपुर के राजा दलपत, सम्राट से पराजित होकर बंदी किए गए और अंत में जब बहुत आर्थिक दंड के पश्चात वे बंधन मुक्त हुए तो उन्होंने पुनः सम्राट के विरुद्ध सशस्त्र क्रांति की। जहाँगीर के राजत्वकाल में भी उनकी क्रांति चलती रही, जिसके परिणाम स्वरूप भोजपुर लूटा गया तथा उनके उत्तराधिकारी प्रताप को शाहजहाँ ने फाँसी की सजा दी।"[2]

भोजपुर के प्राचीन नगर के नाम पर ही इस क्षेत्र का नाम भोजपुर पड़ा, जो आगे चलकर इस नाम का परगने तथा जिले का नाम भी भोजपुर हुआ। प्राचीन काल में भोजपुर नगर के दक्षिण तथा वर्तमान आरा जिले के उत्तर का अर्ध भाग ही इस प्रांत की सीमा थी। सन् **'1781 के जेम्स रेनेल2'** के एटलस में आरा के उत्तरी भाग के नाम रोतास (रोहतास) प्रांत मिलता है। इस प्रकार 18 वीं. शताब्दी में भोजपुर एक प्रांत था। धीरे- धीरे भोजपुरी इस प्रांत के निवासियों तथा उसकी बोली के रूप में भी प्रयुक्त होने लगा। चुँकि इस प्रांत की बोली ही इसके उत्तर दक्षिण तथा पश्चिम में भी बोली जाती थी।

[2] तिवारी, उदयनारायण. भोजपुरी भाषा और साहित्य. पृ. 232

इसलिए भौगोलिक दृष्टि से भोजपुरी प्रांत से बाहर होने पर भी इधर की जनता तथा उनकी भाषा के लिए भोजपुरी शब्द ही प्रचलित हो चला।

यह एक विशेष बात है कि भोजपुर के चारों ओर ढाई करोड़ से अधिक जनता की बोली का नाम भोजपुरी हो गया। प्राचीन काल में भोजपुरी का यह क्षेत्र 'काशी', 'मल्ल' तथा पश्चिमी मगध एवं झारखंड (वर्तमान छोटा नागपुर) के अंतर्गत था। मुगलों के राजत्वकाल में जब भोजपुर के राजपूतों ने अपनी वीरता तथा सामरिक शक्ति का विशेष परिचय दिया तब एक ओर जहाँ भोजपुरी शब्द जनता तथा भाषा दोनों का वाचक बनकर गौरव का द्योतन करने लगी, वहीं दूसरी ओर, वह एक भाषा के नाम पर प्राचीन काल के तीन प्रान्तों को एक प्रांत में गुथने में भी समर्थ हुआ।

इस प्रकार **17 वीं., 18 वीं**. शताब्दी में मागधी भाषा के इस रूप के बोलने वाले भोजपुरी कहलाए। अतएव मुगल सेना तथा उसके बाद **1857** के भारतीय विद्रोह तक ब्रिटिश सेना में उनका बड़ा सम्मान रहा।

भोजपुरी में स्थान भेद- भोजपुरी के अंतर्गत स्थान भेद से बोलियों का नाम भी पड़ गया है, जैसे- छपरा जिले की भोजपुरी को 'छपरहिया' तथा 'बनारस' की भोजपुरी को 'बनारसी बोली' कहते हैं। इसी प्रकार बलिया और गाजीपुर के पश्चिमी और आजमगढ़ के पूर्वी क्षेत्र की बोली 'बसन्ही' कहलाती है। इधर बाँगर उस क्षेत्र को कहते हैं जहाँ गंगा की बाढ़ नहीं जाती।

भोजपुरी क्षेत्र के बाहर भोजपुरी का सबसे बड़ा अड्डा कलकत्ता है।" कलकत्ता को हम वास्तव में भोजपुरी जीवन तथा संस्कृति का केंद्र कह सकते हैं। हजारों भोजपुरी कलकत्ता तथा भागीरथी के किनारे स्थित जुट के कारखानों में काम करते थे और कर रहे हैं। कलकत्ता के '**ओक्टार्लोनी मानुमेंट**' के पास किले का मैदान [जिसे भोजपुरी मीनीमठ (मौन रहने वाले साधु का मठ) कहते हैं।] वास्तव में भोजपुरी का **हाइडपार्क** है। प्रत्येक रविवार को हजारों भोजपुरी इस मैदान में एकत्र होते हैं तथा भोजपुरी गीतों, लोक- कथाओं तथा लोक गाथाओं (अल्हा, बीजमैल आदि) से अपना मनोरंजन करते हैं।" [3]

आदर्श भोजपुरी का राउर शब्द इतना प्रसिद्ध तथा महत्वपूर्ण है कि अवधी के कवि '**गोस्वामी तुलसी दास**' जी ब्रजभाषा के कवि '**सूरदास**' जी से लेकर '**श्री जगन्नाथ दास रत्नाकर**' तक ने इसका प्रयोग किया है। सच बात तो यह है कि अवधी ब्रजभाषा तथा अन्य पछाँही बोलियों में इस

[3] तिवारी, उदयनरायन. भोजपुरी भाषा और साहित्य. पृ. 237

सर्वनाम का समानार्थक कोई शब्द है ही नहीं। गोस्वामी तुलसीदास जी अपने "रामचरितमानस" में लिखते हैं:

जो राउर अनुशासन पाऊँ।
कंदुक इव ब्रह्मांड उठाऊँ।।

- सूरदास के एक पद की टेक है:

'मधुप राउरी पहिचान'

- श्री जगन्नाथ रत्नाकर उद्धव शतक के एक पद में कहते हैं :

'फैले बरसाने में ण रावरी कहानी यह'

1.5 हिंदी और भोजपुरी की भाषा व्यवस्था : तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य

1.5.1 ध्वनि व्यवस्था – ध्वनि के बिना भाषा की कल्पना नहीं की जा सकती। बल्कि यह कहा जा सकता है कि ध्वनि भाषा की आधार- शिला है। वस्तुतः हम अपनी वगिन्द्रियों द्वारा जो कुछ भी बोलते हैं अथवा उसका उच्चारण करते हैं, वह ध्वनि है। इस प्रकार मनुष्य की वगिन्द्रियों से अभिव्यक्त / सुनी जानेवाली वाणी ध्वनि है, और यही ध्वनि जब सार्थक बन जाती है, तब वह भाषा का रूप धारण कर लेती है। **उदहारण-**

	हिंदी	**भोजपुरी**	**हिंदी**	**भोजपुरी**
1-	**अ**	**आ**	**आ**	**अ**
	हरा	हारा	आशीर्वाद	असिरवाद
	चना	चाना	आस्था	अस्था
2-	**औ**	**ओ**	**उ**	**ओ**
	भौंकना	भोंकना	बुखार	बोखार
	खौफ़	खोफ	खुराक	खोराक
3-	**औ**	**अउ**	**औ**	**उ**
	दौलत	दउलत	लौकी	लउकी
	सौत	सउत	सौदा	सउदा
4-	**ऐ**	**अ**	**ऐ**	**इ**
	ऐलान	अइलान	थैला	थइला

	ऐठना	अइठना	भैंस	भइस
5-	**खा**	**क**	**व**	**ब**
	खाख	खाक	वतन	बतन
			वहम	बहम
6-	**ण**	**न**	**ग**	**न**
	चरण	चरन	गेंदा	गेना
	मरण	मरन		
7-	**श**	**स**	**ड़**	**र**
	शाम	साम/साँझ	थोड़ा	थोरा
	शौकीन	सौकिन	पुड़ी	पुरी
8-	**ण**	**र**	**प्र**	**प**
	गुण	गुर	प्रवेश	परबेश
			प्रकार	परकार
			प्राण	परान
9-	**य**	**ज**	**ष**	**ख**
	यज्ञ	जग	षडभुज	खड़भुज
	योग	जोग	षडानन	खड़ानन
	युवराज	युवराज	षडयंत्री	खड्यंत्री
	यश	जस	षष्ठी	खष्ठी
10-	**ग्र**	**ग**	**श्र**	**स**
	ग्रहण	गरहन	श्राद्ध	सराध
	ग्राम	गाँव	श्राप	सराप
	ग्रह	गरह	श्रीमान	सिरमान
11-	**कृ**	**क**		
	कृषि	किरसी	त्योहार	तिवहार
	कृति	किरती	त्याग	तयाग

	कृष्ण	किसन	त्वमेव	तमेव
12-	**प्य**	**प**	**व्य**	**ब**
	प्याला	पियाला	व्यवस्था	बेवस्था
	प्यारा	पियारा	व्यथा	बेथा
	प्यास	पियास		
13-	**ज्य**	**ज**	**त्क**	**क**
	ज्योति	जोति	सत्कार	सतकार
	ज्यादा	जादा	चमत्कार	चमतकार

1.5.2 शब्द व्यवस्था –जब भोजपुरी भाषी हिंदी भाषा में संप्रेषण करता है तो उसकी मातृभाषा की शब्द संपदा हिंदी भाषा की शब्द संपदा पर निम्नलिखित रूप से प्रभाव डालती हैं,

उदहारण-

	हिंदी शब्द	**भोजपुरी शब्द**
1.	शाम	साँझ/साम
2.	पहुँचना	चहुँपना
3.	चिमटा	सिउठा
4.	कक्षा	कच्छा
5.	सफेद	उज्जर
6.	क्षमा	छमा
7.	खंडहर	खड़हर
8.	उलझन	ओलझन
9.	भौकाना	भोकना
10.	खुराक	खोराक
11.	खौफ़	खोफ
12.	औज़ार	अउजार
13.	काला	करिया
14.	चावल	चाउर
15.	कुम्हार	कोहार

16.	गौरी	गोरी/गउरी
17.	नौकर	नोकर
18.	बुखार	बोखार
19.	दौलत	दउलत
20.	भौचक्क	भउचक
21.	सौंफ	सउँफ
22.	चौसा	चउँसा
23.	लक्षण	लच्छन
24.	व्यवहार	बेवहार
25.	कलेजा	करेजा
26.	कलेजी	करेजी
27.	काला	करिया
28.	कोण	कोन
29.	गुण	गुर
30.	दो	दू
31.	सौत	सउत
32.	थैला	थइला
33.	ऐलान	अइलान
34.	कौरव	कउरव
35.	मौत	मउत
36.	उन्नीस	ओनइस
37.	लौकी	लउकी
38.	इक्कीस	एकइस
39.	तैसे	तइसे
40.	औरत	अउरत
41.	सिंदूर	सेनूर/सेंहूर
42.	चौगुना	चउगुना
43.	ऐठना	अइठना
44.	ऐसा	अइसा
45.	हथौड़ी	हथौरी
46.	बाढ़	बाड़
47.	मूँछ	मोंछ

48.	सैजन	सएजन
49.	टुकड़ा	टुकरा
50.	मिर्च	मरिचा
51.	दैत्य	दइत
52.	टेढ़ा	टेड़ा
53.	औलाद	अउलाद
54.	पाण्डेय	पाड़े
55.	वर्षा	बरखा

1.5.3 वाक्य व्यवस्था (पदबंध / उपवाक्य) : भाषा का प्रमुख कार्य भावाभिव्यक्ति है और किसी भाव की संपूर्ण अभिव्यक्ति वाक्य के माध्यम से होता है। वास्तव में, भाव हमारे मन में अव्यक्त वाक्य के रूप में विद्यमान रहते हैं; ध्वनि प्रतीकों या लिपि -चिह्नों का आधार पाने पर वाक्य का व्यक्त रूप सामने आता है। इस प्रकार व्यापक परिप्रेक्ष्य में कहा जा सकता है कि मनुष्य जो भी सोचता है या अभिव्यक्त करता है, वह वाक्य के माध्यम से ही करता है, इस तरह सिद्ध होता है कि भावभिव्यक्ति के संदर्भ में वाक्य भाषा की प्रथम तथा सहज इकाई है।

वाक्य के अंग- वाक्य के दो अंग हैं-

1- उद्देश्य, 2- विधेय।

1- उद्देश्य (Subject) वाक्य में जो ज्ञात हो, उसे उद्देश्य कहते हैं अर्थात् वाक्य का कर्ता उद्देश्य होता है। **जैसे-**

- **अनुराग** खेलता है। **सचिन** दौड़ता है। **(हिंदी)**
- **अनुराग** खेलत बा। **सचिन** दउड़त बा। **(भोजपुरी)**

उपर्युक्त वाक्यों में **'अनुराग'** और **'सचिन'** ज्ञात है। अतः ये उद्देश्य हैं। इसके अंतर्गत कर्ता और कर्ता का विस्तार आता है। **जैसे-**

- परिश्रम करने वाला व्यक्ति। **(हिंदी)**
- मेहनत करे वाला अदमी। **(भोजपुरी)**
- इस वाक्य में कर्ता (व्यक्ति; अदमी) का विस्तार **'परिश्रम', 'मेहनत'** करनेवाला है।

2- विधेय (Predicate) : वाक्य में उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाता है उसे विधेय कहते हैं। जैसे, मनोज खेलता है; मनोज खेलत बाड़न। इस वाक्य में 'खेलता है' और 'खेलत बाड़न' विधेय है। दूसरे शब्दों में वाक्य के कर्ता (उद्देश्य) को अलग करने के बाद वाक्य में जो कुछ शेष रह जाता है, वह विधेय कहलाता है।

वाक्य के भेद- वाक्य अनेक प्रकार के हो सकते हैं- उसका विभाजन दो आधारों पर किया जा सकता है-

1) अर्थ के आधार पर- अर्थ के आधार पर वाक्य के निम्नलिखित आठ भेद हैं-

क) विधानवाचक (Assertive Sentence): जिन वाक्यों में क्रिया के करने या होने की सूचना मिले, उन्हे विधानवाचक वाक्य कहते हैं। **जैसे –**

हिंदी वाक्य	भोजपुरी वाक्य
मैंने दूध पी लिया।	हम दूध पी लेहनी।
वर्षा हो रही है।	बरखा होखत बाटे।
राम पढ़ रहा है।	राम पढ़त बा।

ख) निषेधवाचक (Negative Sentence): जिन वाक्यों से कार्य के न होने का भाव प्रकट होता है, उसे निषेधवाचक वाक्य कहते हैं। **जैसे-**

हिंदी वाक्य	भोजपुरी वाक्य
उसने चाय नहीं पी।	उ चाह ना पियलन।
मैंने खाना नहीं खाया।	हम खाना ना खइनी।
तुम मत लिखो।	तू मत लिखऽ।

ग) आज्ञावाचक (Imperative Sentence): जिन वाक्यों से आज्ञा, प्रार्थना, उपदेश आदि का बोध होता है, उन्हें आज्ञावाचक वाक्य कहते हैं। **जैसे-**

हिंदी वाक्य	भोजपुरी वाक्य
बाजार जाकर फल ले आओ।	बाजार जाके फल ले आवऽ।
मोहन तुम बैठकर पढ़ो।	मोहन तूँ बइठ के पढ़ऽ।
बड़ों का सम्मान करो।	बड़न क सम्मान / आदर करऽ।

घ) प्रश्नवाचक (Interogative Sentence): जिन वाक्यों से किसी प्रकार का प्रश्न पूछने का ज्ञान होता है, उसे प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं। **जैसे-**

हिंदी वाक्य	भोजपुरी वाक्य
सीता तुम कहाँ से आ रही हो?	सीता तू कहाँ से आवत बाड़ू?
तुम गड्ढा क्यों खोद रहे हो?	तु गढ़हा काँहे खोदत/करत बाड़ऽ ?
रमेश वहाँ जाएगा?	रमेश उहवाँ जाई?

ड़) इच्छावाचक (Illative Sentence): जिन वाक्यों से इच्छा, आशीष या शुभकामना आदि का बोध होता है, उसे इच्छावाचक वाक्य कहते हैं। **जैसे-**

हिंदी वाक्य	भोजपुरी वाक्य
तुम्हारा कल्याण हो।	तोहार कल्यान / भलाई होखे।
आज तो मैं केवल फल खाऊँगा।	आज त हम खाली फल खाइब।
भगवान तुम्हें लंबी उम्र दें।	भगवान तोहके लमहर जिनगी / उमिर देंस।

च) संदेहवाचक (Sentence indicating Doubt): जिन वाक्यों में संदेह या संभावना व्यक्त होती है, उन्हें संदेहवाचक वाक्य कहते हैं। **जैसे-**

हिंदी वाक्य	भोजपुरी वाक्य
शायद शाम को वर्षा हो जाए।	होसके सांझी के बरखा होखे।
वह आ रहा होगा, पर हमें क्या मालूम।	उ आवत होई, बाकी हम का जानत बानी।
हो सकता है राजेश आ जाए।	हो सके राजेश आ जाव।

ज) विस्मयवाचक (Exclamatory Sentence): जिन वाक्यों से आश्चर्य, घृणा, क्रोध, शोक आदि भावों की अभिव्यक्ति होती है, उसे विस्मयवाचक वाक्य कहते हैं। **जैसे-**

हिंदी वाक्य	भोजपुरी वाक्य
वाह ! कितना सुंदर दृश्य है।	बाह ! केतना नीमन नजारा बा।
हाय ! उसकी माँ पागल जैसी रो रही है।	हाय ! ओकर माई पागल जइसन रोवत बिया।
शाबाश ! तुमने बहुत अच्छा काम किया।	सबास ! तू खूबे नीमन काम कइल ह।

झ) संकेतवाचक (Conditional Sentence): जिन वाक्यों में एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया पर निर्भर होता है। उन्हें संकेतवाचक वाक्य कहा जाता है; **जैसे-**

हिंदी वाक्य	भोजपुरी वाक्य
यदि परिश्रम करोगे तो अवश्य सफल होगे।	जदि मेहनत करबऽ त जरूर पास होइबऽ।
पिताजी अभी आते तो अच्छा होता।	बाबू जी लगले अइतन त ठीक रहीत।
अगर वर्षा होगी तो फसल भी अच्छी होगी।	अगर बुन्नी/बरखा होखी त फसल बढ़ियाँ/नीमन होइ।

2- रचना के आधार पर- रचना के आधार पर वाक्य के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं-

(क) सरल वाक्य / साधारण वाक्य (Simple Sentence) : जिन वाक्यों में केवल एक ही उद्देश्य और एक ही विधेय होता है, उन्हें सरल वाक्य या साधारण वाक्य कहते हैं। सरल वाक्य में एक ही समापिका क्रिया (करता है, किया, करेगा आदि) होती है। **जैसे-**

हिंदी वाक्य	भोजपुरी वाक्य
मुकेश पढ़ता है।	मुकेश पढ़त बा।
शिल्पा पत्र लिखती है।	शिल्पा पाती/चिट्ठी लिखेले।
राकेश ने भोजन किया।	राकेश खाना खइलऽ ह।

(ख) संयुक्त वाक्य (Compound Sentence) : जिन वाक्यों में दो या दो से अधिक सरल वाक्य योजकों (और, एवं, तथा, या, अथवा, इसलिए, फिर भी, किंतु, परंतु, लेकिन, पर, अतः, तो, नहीं तो आदि) से जुड़े हों, उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं। **जैसे-**

हिंदी वाक्य	भोजपुरी वाक्य
वह सुबह गया और शाम को लौट आया।	उ सबेरे गइल अउरी सांझी के लवट आइल।
राधा बोलो पर असत्य नहीं।	राधा बोल बाकी झूठ नाहीं।
उसने बहुत परिश्रम किया किंतु सफलता नहीं मिली।	उ बहुते मेहनत कइलस बाकी सफलता नाहीं मिलल।

(ग) मिश्रित/मिश्र वाक्य (Complex Sentence) : जिन वाक्यों में एक प्रधान (मुख्य) उपवाक्य हो और अन्य आश्रित (गौण) उपवाक्य हों तथा जो आपस में 'कि'; 'जो.....वह.....', 'जितना.....उतना.....', 'जैसा.....वैसा....', 'जब....तब....', 'जहाँ.....वहाँ....', 'जिधर.....उधर, 'अगर / यदि..... तो....', आदि से मिश्रित (मिले-जुले) हों उन्हें मिश्रित वाक्य कहते हैं। इनमें एक मुख्य उद्देश्य और मुख्य विधेय के अलावा एक से अधिक समापिका क्रियाएँ होती हैं। **जैसे-**

हिंदी	भोजपुरी
मैं जनता हूँ कि तुम्हारे अक्षर नहीं बनते।	हम जानत बानी की तोहार अक्षर ना बनेला।
जो लड़का मेरे कमरे में बैठा है वह मेरा भाई है।	जेवन लइका हमार कमरा में बइठल बा उ हमार भाई हउवे।
यदि नागपुर जाओगे तो अच्छा संतरा मिलेगा।	अगर नागपुर जइबऽ त नीमन संतरा मिली।

वाक्य विग्रह- (Analysis) वाक्य के विभिन्न अंगों को अलग-अलग किए जाने की प्रक्रिया को वाक्य विग्रह कहते हैं। इसे 'वाक्य विभाजन' या 'वाक्य विश्लेषण' भी कहा जाता है। सरल वाक्य का विग्रह करने पर एक उद्देश्य और एक विधेय बनते हैं। संयुक्त वाक्य में से योजक को हटाने पर दो स्वतंत्र उपवाक्य (यानि दो सरल वाक्य) बनते हैं। मिश्र वाक्य में से योजक हटाने पर दो अपूर्ण उपवाक्य बनते हैं।

- सरल वाक्य = 1 उद्देश्य + 1 विधेय
- संयुक्त वाक्य = सरल वाक्य + सरल वाक्य
- मिश्र वाक्य = प्रधान उपवाक्य + आश्रित वाक्य

उपवाक्य (Clause) : यदि किसी एक वाक्य में एक से अधिक समापिका क्रियाएँ होती है तो वह वाक्य उपवाक्यों में विभाजित हो जाता है और उसमें जितनी भी समापिका क्रियाएँ होती हैं उतने ही उपवाक्य होते हैं। इन उपवाक्यों में से जो वाक्य का केंद्र होता है, उसे मुख्य या प्रधान उपवाक्य कहते हैं और शेष को आश्रित उपवाक्य कहते हैं।

उपवाक्य के तीन प्रकार होते हैं-

1. **संज्ञा उपवाक्य-** जो आश्रित उपवाक्य, प्रधान उपवाक्य की क्रिया के कर्ता, कर्म अथवा क्रिया पूरक के रूप में प्रयुक्त हों, उन्हें संज्ञा उपवाक्य कहते हैं।**जैसे-**

हिंदी वाक्य	भोजपुरी वाक्य
मैं जनता हूँ कि **वह बहुत ईमानदार है।**	हम जानत बानी कि उ **बहुते चालाक बा।**
उसका विचार है कि **राम सच्चा आदमी है।**	उनकर विचार बा कि **राम बढ़ियाँ / नीमन आदमी ह ।**
रश्मि ने कहा **उसका भाई पटना गया है।**	रश्मि कहली ह **उनकर भाई पटना गइल बाड़न।**

2- विशेषण उपवाक्य- जब कोई आश्रित उपवाक्य प्रधान उपवाक्य के संज्ञापद की विशेषता बताता है, उन्हें विशेषण उपवाक्य कहते हैं। **जैसे-**

हिंदी वाक्य	**भोजपुरी वाक्य**
मैंने एक व्यक्ति को देखा **जो बहुत मोटा था।**	हम एगो आदमी के देखलीं **जवन बहुत मोट रहे।**
वे फल कहाँ हैं जिनको आप लाए थे।	उ फल कहवाँ बा जेवन तु लियाइल रहल।

3- क्रियाविशेषण उपवाक्य- जो आश्रित उपवाक्य प्रधान उपवाक्य के क्रिया की विशेषता बतावे, उसे क्रियाविशेषण उपवाक्य कहते हैं। ए प्रायः क्रिया का काल, स्थान, रीति, परिमाण, कारण आदि के सूचक क्रियाविशेषण के द्वारा प्रधान वाक्य से जुड़े रहते हैं। **जैसे -**

हिंदी वाक्य	**भोजपुरी वाक्य**
जब वर्षा हो रही थी तब मैं कमरे में था।	**जब बरखा होत रहल** तब हम कमरा में रहनी।
जहाँ-जहाँ वे गए, उनका स्वागत हुआ।	**जहवाँ-जहवाँ उ गइलन,** उनकर स्वागत भइल।
यदि मैंने परिश्रम किया होता तो अवश्य सफल होता।	**जदी हम मेहनत कइले रहती** त जरूर पास हो गइल रहतीं।